

राजस्थान सिविल सेवा अपील अधिकरण, जयपुर

अवमानना प्रार्थना पत्र संख्या – 78/2022
(अपील संख्या – 472/1995)

देवीदास तनानी

—प्रार्थी—अपीलार्थी

बनाम

- श्री हेमन्त गेरा, प्रमुख शासन सचिव, कार्मिक (क-4) विभाग, शासन सचिवालय, जयपुर।

—अप्रार्थी—प्रत्यर्थी

प्रस्तुतिकरण की दिनांक : 29.03.2022

आदेश की दिनांक : 20.10.2023

उपस्थित :-

प्रार्थी—अपीलार्थी की ओर से : स्वयं

अप्रार्थीगण—प्रत्यर्थीगण की ओर से : श्री गौरव सिंह, राजकीय अधिवक्ता

समक्ष :- शुचि शर्मा, सदस्य
चेतन राम देवड़ा, सदस्य

आदेश

- प्रार्थी—अपीलार्थी के विद्वान् अधिवक्ता ने यह अभिकथन किया है कि अप्रार्थी—प्रत्यर्थी ने अधिकरण के अपील संख्या 472/1995 में दिनांक 07.01.1999 को पारित आदेश की पालना आदिनांक तक नहीं की है। अधिकरण के पूर्वोक्त आदेश दिनांक 07.01.1999 का प्रभावी भाग (Operating Part) निम्न प्रकार है :-

“उपरोक्त विवेचन के आधार पर अधिकरण के मत में जब अपीलार्थी के संबंध में 5 वर्षों का सेवाभिलेख उत्कृष्ट हो तथा शेष वर्षों का बहुत अच्छा या अच्छा सेवाभिलेख हो तो उसे योग्यता के आधार पर आर.ए.एस. की चयन वेतनमान में पदोन्नत किया जाना चाहिए था, जो नहीं किया गया है।

अतः अधिकरण यह निर्धारित करता है कि अपीलार्थी वर्ष 1994-95 की आर.ए.एस. की चयन वेतनमान में रिक्तियों के विरुद्ध योग्यता के आधार पर पदोन्नति का पात्र है व इसके लिए उपयुक्त है। अतः निर्देश दिये जाते हैं कि अधिकरण के उपरोक्त निष्कर्ष को ध्यान में रखते हुए अपीलार्थी के संबंध में पदोन्नति के आदेश पारित करने की कार्यवाही दो माह में की जाये।

उपरोक्त अपील अपीलार्थी निस्तारित की जाती है।”

- उनका आगे अभिकथन है कि प्रत्यर्थी विभाग द्वारा माननीय अधिकरण के आदेश दिनांक 07.01.1999 की बिना उचित कारण के जानबूझ कर अवहेलना

की जा रही है, जो कि माननीय अधिकरण के आदेशों की स्पष्ट अवहेलना है। प्रत्यर्थी जानबूझ कर अधिकरण के आदेश की पालना नहीं कर रहा है। इसलिए माननीय अधिकरण के आदेशों की अवहेलना के दोषी है। अतः अवमानना प्रार्थना पत्र मय शपथ पत्र प्रस्तुत कर प्रार्थना है कि प्रत्यर्थी विभाग से माननीय अधिकरण के आदेश दिनांक 07.01.1999 की पालना करवायी जावे और पालना नहीं करने की स्थिति में प्रत्यर्थी विभाग के विरुद्ध अवमानना कार्यवाही प्रारम्भ कर माननीय उच्च न्यायालय को दण्ड हेतु रैफर किया जावे।

3. अप्रार्थी-प्रत्यर्थी की ओर से अवमानना प्रार्थना पत्र का जवाब प्रस्तुत किया गया कि उत्तरदाता विपक्षी के द्वारा उपरोक्त प्रकरण में किसी भी प्रकार से कोई अवमानना कारित नहीं की गयी है। माननीय अधिकरण के आदेशों की पालना में विपक्षी ने कभी भी किसी भी प्रकार की कोई कोताई नहीं की है। अतः जवाब अवमानना प्रस्तुत कर निवेदन है कि प्रार्थी-अपीलार्थी की अवमानना याचिका को निरस्त फरमावे।
4. हमने उभय पक्षकारों की बहस सुनी। पत्रावली का अवलोकन किया गया। बहस के दौरान प्रार्थी-अपीलार्थी के विद्वान् अधिवक्ता ने अवमानना प्रार्थना पत्र में वर्णित तथ्यों को दोहराया व प्रत्यर्थी विभाग के विद्वान् राजकीय अधिवक्ता ने अपने जवाब के तथ्यों की पुनरावृत्ति की।
5. स्वीकृत रूप से अधिकरण द्वारा पारित आदेश दिनांक 07.01.1999 के क्रियाशील भाग में यह अंकित किया गया है कि :-

“उपरोक्त विवेचन के आधार पर अधिकरण के मत में जब अपीलार्थी के संबंध में 5 वर्षों का सेवाभिलेख उत्कृष्ट हो तथा शेष वर्षों का बहुत अच्छा या अच्छा सेवाभिलेख हो तो उसे योग्यता के आधार पर आर.ए.एस. की चयन वेतनमान में पदोन्नत किया जाना चाहिए था, जो नहीं किया गया है।

अतः अधिकरण यह निर्धारित करता है कि अपीलार्थी वर्ष 1994-95 की आर.ए.एस. की चयन वेतनमान में रिक्तियों के विरुद्ध योग्यता के आधार पर पदोन्नति का पात्र है व इसके लिए उपयुक्त है। अतः निर्देश दिये जाते हैं कि अधिकरण के उपरोक्त निष्कर्ष को ध्यान में रखते हुए अपीलार्थी के संबंध में पदोन्नति के आदेश पारित करने की कार्यवाही दो माह में की जाये।

उपरोक्त अपील अपीलार्थी निस्तारित की जाती है।”

6. यह स्वीकृत रूप से प्रकट है कि अधिकरण ने प्रार्थी-अपीलार्थी की पूर्वोक्त अपील में आदेश पारित कर अप्रार्थी-प्रत्यर्थी को कार्यवाही करने का निर्देश दिया था। यह भी स्वीकृत तथ्य है कि अप्रार्थी-प्रत्यर्थी ने अधिकरण के आदेश

के विरुद्ध याचिका दायर कर रखी है, परंतु अभी तक अधिकरण के आदेश दिनांक 07.01.1999 की क्रियान्विति को स्थगित नहीं करवाया है। इस प्रकार यह स्वतः स्पष्ट है कि अधिकरण के द्वारा पारित उक्त आदेश की पालना अप्रार्थी-प्रत्यर्थी ने अभी तक नहीं की है। अतः अप्रार्थी-प्रत्यर्थी के लिये यह आवश्यक था कि वे अधिकरण के आदेश की समयावधि में पालना करते या माननीय उच्च न्यायालय से इसकी क्रियान्विति पर कोई स्थगन आदेश प्राप्त करते। प्रिवी काउन्सिल के सर लॉरेन्स जेनकिन्स ने जसकर्ण बोइद बनाम पिरथीचन्द लाल (ए.आई.आर. 1918 पी.सी. 151) के प्रकरण में निम्न प्रकार अवधारित किया था :-

"whatever be the theory under other systems of law, under the Indian law and procedure an original decree is not suspended by the presentation of an appeal nor is its operation interrupted where the decree on appeal is merely one of dismissal. There is nothing in the Indian law to warrant the suggestion that the decree or order of the court or tribunal of the first instance becomes final only on the termination of all proceedings by way of appeal or revision."

7. माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने स्टेट ऑफ उत्तर प्रदेश राज्य बनाम मोहम्मद नूह (ए.आई. आर. 1958 एस.सी. 86) में प्रिवी काउंसिल के पूर्वोक्त निर्णय का अनुमोदन करते हुए निम्न मत व्यक्त किया था :-

"the filing of an appeal might put the decree or order in jeopardy but until it is reversed or modified it remains effective."

8. इसी प्रकार माननीय सर्वोच्च न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश माननीय न्यायमूर्ति पी.डी.देसाई ने हंसराज धीर के प्रकरण (1985 Cri. L.J. 1030) में अवमानना प्रकरण के सिद्धान्तों की निम्न प्रकार व्याख्या की थी :-

"Once a case is decided, it is the bounden duty of the State and its subordinates to implement, with the utmost expedition, the said decision. In a Government which is ruled by law, there must be complete awareness to carry out faithfully and honestly the decisions rendered by courts of law after effective adjudication. Then only will private individuals, organisations and institutions learn to respect the decisions of courts. In absence of such attitude on the part of all concerned, chaotic conditions might arise and the functions assigned to the courts of law under the Constitution might be rendered a futile exercise. It requires to be emphasised, in this connection, that mere preferment of an appeal does not automatically operate as a stay of the decision under appeal and that till an application for stay is moved and granted by the appellate court, or, in the alternative, the court which rendered the decision is moved and grants an interim stay of the decision pending the preferment of an appeal and grant of stay by the appellate court, the decision continues to be operative. Indeed, non-compliance with the decision on the mere ground that an appeal is contemplated to be preferred or is actually preferred, and that, therefore, the matter is subjudice, may amount to contempt of court punishable under the Contempt of Courts Act, 1971."

9. उपर्युक्त विनिश्चयों के आलोक में और प्रकरण के तथ्यों व परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए हमारे विनम्र मतानुसार यह स्पष्ट है कि अप्रार्थी-प्रत्यर्थी ने इस अधिकरण के आदेश दिनांक 07.01.1999 की पालना न कर उक्त न्यायिक आदेश की अवमानना कारित की है। हम इस अवमानना प्रकरण को अधिकरण में लम्बित रखना उचित नहीं समझते हैं और इस प्रकरण को माननीय राजस्थान उच्च न्यायालय को Contempt of Courts Act, 1971 की धारा 10 के प्रावधान के क्रम में उपर्युक्त अवमानना कृत्य के लिए अवमाननाकर्ताओं के विरुद्ध अवमानना की कार्यवाही संस्थित करने हेतु संदर्भित करना उचित समझते हैं।
10. उपर्युक्त विवेचन के अनुसार प्रार्थी-अपीलार्थी के अवमानना प्रार्थना पत्र को स्वीकार किया जाकर अधिकरण के रजिस्ट्रार को निर्देश दिए जाते हैं कि वे अप्रार्थीगण-प्रत्यर्थीगण के विरुद्ध न्यायालय की अवमानना अधिनियम 1971 की धारा 10 के अन्तर्गत अवमानना की कार्यवाही संस्थित करने हेतु प्रकरण माननीय राजस्थान उच्च न्यायालय की जयपुर पीठ, जयपुर को संदर्भित करावें।

(चेतन राम देवड़ा)
सदस्य

(शुचि शर्मा)
सदस्य